PAPER-C.5

★ मूल्यांकन

* अर्थ * परिभाषा * शैक्षिक मूल्यांकन की विशेषता।

Introduction:- मूल्यांकन शैक्षिक प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। मूल्यांकन किसी भी व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक सभी पक्ष की जाँच करने का नाम है। शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यांकन को एक तकनीकी शब्द के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। इस तकनीकी के अंतर्गत केवल छात्रों की विषय विशेष संबंधी जानकारी प्राप्त होती है बल्कि यह भी जानने का प्रयास करते है की छात्रों के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास किससीमा तक हुआ है।

मूल्यांकन शब्द स्वयं भी अपने अर्थ को स्पष्ट करता है, मूल्यांकन का अर्थ है मूल्य की आकलन करना, या आंकन करना।

Definition:- मूल्यांकन को बहुत सारे महान शिक्षाशास्त्रीयों एवं मनोवैज्ञानिक ने अपने- अपने अनुसार परिभाषित किया है कुछ परिभाषा निम्नलिखित हैं।

→ NCERT के अनुसार:- मूल्यांकन एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा यह ज्ञात किया जाता है कि उद्देश्य किस सीमा तक प्राप्त किये गये। कक्षा में

P.T.O

Scanned with CamScanner

दिये गये अधिगम पाठ्यक्रम, आदी कहाँ तक प्रभावशाली सिद्ध हुए है। तथा शिक्षा के उद्देश्य की कितनी प्राप्ति हुई है।

→DR. RAMSHKAL PANDEY के अनुसार :- बालक ने कितना ज्ञान अर्जित कर लिया है तथा कितना अभी अर्जित करना है, उसके व्यवहार में कितना सुधार हुआ और कितना सुधार करना बचा है ? आदी बातें बालक के अर्जित ज्ञान एवं व्यवहार की जाँच करके ही पता किया जा सकता है। इस प्रकार अर्जित ज्ञान संशोधन (सुधार) व्यवहार की परख करने की प्रक्रिया को मूल्यांकन कहते हैं।

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है की मूल्यांकन के द्वारा शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति की जाँच करने की व्यापक प्रक्रिया है। जिसमें यह देखते है की बालक शिक्षा के लक्ष्य की प्राप्ति में कितना सफल रहा।

* शैक्षिक मूल्यांकन की विशेषता :-

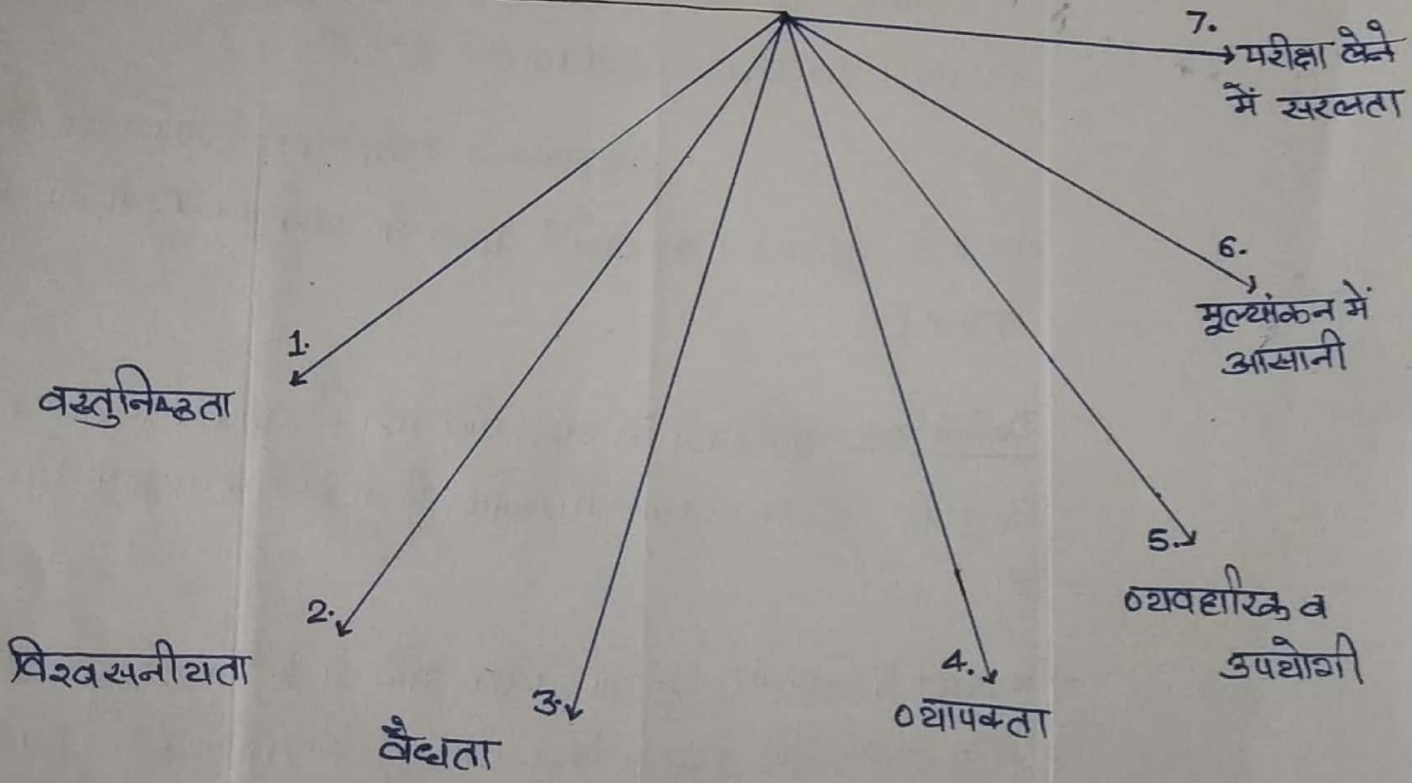

Scanned with CamScanner

1. **वस्तुनिष्ठता :-** किसी भी मूल्यांकन की प्रमुख विशेषता उसकी वस्तुनिष्ठता से है। वस्तुनिष्ठता दो प्रकार की होती है।

1. प्रमाणित वस्तुनिष्ठता, 2. अध्यापक निर्मित वस्तुनिष्ठता।

वस्तुनिष्ठता मूल्यांकन द्वारा छात्रों की विषय-वस्तु की जाँच की जाँच की जाती है एवं इसका प्रयोग बालक के ज्ञानार्जन का मापन करने के लिए किया जाता है।

2. **विश्वसनीयता :-** विश्वसनीयता परीक्षा वही कही जा सकती है जिसमें एक छात्र की उत्तर पुस्तिका में अलग-अलग समयों पर परीक्षक बराबर नम्बर दे। अर्थात् जब एक ही परीक्षा को समान परिस्थितियों में एक ही समूह द्वारा विभिन्न समय पर देने पर भी उनके अंक बराबर आते हैं तो उस परीक्षा को विश्वसनीय माना जाता है।

3. **वैधता :-** वैधता से तात्पर्य किसी भी काम करने में प्रयोग की जाने वाली सामग्री आदि के उपयोग से उस काम को सफलता पूर्वक पूरा कर लेना, उसे हम कह सकते हैं की यह काम इस समाग्री के उपयोग से वैध है।

अर्थात् किसी परीक्षा की वैधता यह है कि वह कितनी सफाई से विद्यार्थी के योग्यता की माप करता है।

4. **व्यापकता :-** व्यापकता से तात्पर्य योग्यता के मापन के लिए प्रश्नों का समावेश परीक्षा में हो। परीक्षा में दिये गये प्रश्न पूरे पाठ्यक्रम को समेटता हो। उद्देश्य शिक्षण विधि, विषय-वस्तु एवं मूल्यांकन एक दूसरे पर भी आश्रित हों तथा पूर्ण हों न कि पृथक अलग-अलग।

P.T.O

Scanned with CamScanner

5. व्यवहारिक व उपयोगी :- मूल्यांकन करते समय ऐसे प्रश्नों को शामिल करना चाहिए जो बालक के व्यवहारिक ज्ञान से संबंधित हो तथा उसको वह उपयोग में भी ला सके।

जिस उद्देश्य के लिए परीक्षा ली जा रही है उसे उद्देश्य की पूर्ति हो। मूल्यांकन की व्यवहारिकता से तात्पर्य परीक्षण की रचना, प्रयोग, अंकन प्राप्त प्रकृतों की व्याख्या एवं निष्कर्ष निकालें।

6. मूल्यांकन में आसानी :- वस्तुनिष्ठ परीक्षण का मूल्यांकन आसानी से एवं कम समय में हो जाता है, क्योंकि उत्तर निश्चित और छोटे होते है तथा मूल्यांकन के लिए कुंजी बनी रहती है। जिसकी सहायता से मूल्यांकन में समय भी कम लगता है।

7. परीक्षा लेने में सरलता :- परीक्षा लेने के लिए जो नियम व शर्तें निर्धारित होते है वह सीधे और आसान होते हैं जिसको सरलता से समझा जा सके तथा प्रयोग में लाया जाए।

CONCLUSION (निष्कर्ष) :- अतः निष्कर्षतः कह सकते है की मूल्यांकन शिक्षा प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग है. जिसके द्वारा छात्रों की उपलब्धि एवं व्यवहार में हो रहे सुधार की जाँच कर उसे और भी अच्छा बनाया जाता है। मूल्यांकन नियमित रूप होना चाहिए जिससे छात्रों की कमीयों की जाँच कर दूर किया जा सके।

Scanned with CamScanner